उपसंहार

उपसंहार

आधुनिक हिंदी साहित्य के जाने माने हस्ताक्षर गिरिराज किशोर ने अपने 'परिशिष्ट' नामक बृहत् उपन्यास में शिक्षा संस्थानों में फैली विसंगतियों को प्रकाश में लाने का प्रामाणिक प्रयास किया है। साथ ही दलित लोगों के वास्तविक जीवन को उजागर किया है। सदियों से दलितों के प्रति देखने की जो सवर्ण मानसिकता है उसमें आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। दलित छात्रों को देश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों में किस प्रकार अमानवीय प्रवृत्तियों का सामना करना पड़ता है इसका सजीव चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। "गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुशीलन" इस महाकाव्यात्मक उपन्यास का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आऐ उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

गिरिराज किशोर के व्यक्ति और साहित्य रूप को देखने से यह परिलक्षित होता है कि - आधुनिक हिंदी साहित्य को अपने कलम से समृद्ध करनेवाले साहित्यकारों में गिरिराज किशोर का नाम अग्रणी है। उनकी डेढ़ साल की छोटी सी उम्र में ही माताजी का देहावसान हो गया। वे मातृस्नेह से वंचित रहें। उनका लालन-पालन उनके दादाजी ने किया। उनके लेखन के पीछे मातृविहीन होना भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। उनके परिवार से हिंदी भाषा का साहित्य पढ़ने को प्रखर विरोध हुआ।लेकिन उन्होंने हिंदी पढ़ने-लिखने का शौक नहीं छोड़ा। उनका लेखनकार्य शरतबाबू, प्रेमचंद, प्रसाद, अज्ञेय, जैनेंद्र आदि का साहित्य पढ़ते-पढ़ते प्रारंभ हो गया।

किशोर ने बचपन से ही लिखना प्रारंभ किया। जीवन के कठिन समय में भी उनका लेखन कार्य जारी रहा। छठीं क्लास से शुरू हुई उनकी लेखन यात्रा जीवन के कठीन प्रसंगों में भी चलती रहीं। किशोर ने नौकरी और साहित्यिक लेखन दोनों को बखूबी से निभाया। उन्हें नौकरी से अनेक बार निष्कासित किया गया लेकिन सच्चाई

उनके साथ थी। वे नोकरी के निलंबन और उससे जुड़े अनुभवों को अपने आप को पहचानने का अवसर मानते हैं।उनका निरंतर साहित्यसृजन किसी भी घटना एवं प्रसंग से अवरुद्ध नहीं हुआ।उनकी सृजनप्रक्रिया का केंद्र अनुभव ही रहा है।

गिरिराज किशोर का साहित्य सृजन बहुआयामी है, उन्होंने अपने पाच दशकों के प्रदीर्घ अवधी में साहित्य को उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार एवं आलोचक के रूप में अपना योगदान दिया है। उनके साहित्य से हमें व्यापक अनुभव विश्व के साथ सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि एवं गहरी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है। गिरिराज किशोर एक प्रसिद्ध साहित्यकार होने के साथ एक अच्छे इन्सान भी है। सामंती परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी अहंकार उन्हें छू भी न पाया है। उनका वैवाहिक जीवन पूर्णत: संतुष्ट रहा है। पत्नी मीरा ने उन्हें लेखन और जीवन में महत्त्वपूर्ण साथ दिया है। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है। उनके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता, संवेदनशीलता, संघर्षशीलता, मिलनसार, गांधीवाद का प्रभाव आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। तो एक साहित्यकार के रूप में अनवरत लेखन कार्य, मानवीय दृष्टि, सामाजिक दायित्व बोध, प्रयोगशीलता, नारी मुक्ति का समर्थन, वैविध्यपूर्ण एवं बहुआयामी लेखन आदि विशेषताएँ रेखांकित होती हैं। किशोर का साहित्य अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है। साथ ही वे अनेक पुरस्कार एवं सम्मान के धनी रहे हैं।

संक्षेप में गिरिराज किशोर एक संपन्न व्यक्तित्व एवं एक सशक्त रचनाकार है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने अपने भीतर की भावनाओं को जगाया है। अपने समग्र जीवन में उन्होंने जो भोगा, अनुभव किया उसे शब्दबद्ध कर रचना रूप दिया है।

आज साहित्य की सर्वाधिक शक्तिशाली विधा उपन्यास है। इसमें व्यक्ति और समाज का चित्रण होता है। हिंदी साहित्य में 1960 ई. के बाद उपन्यास शिल्प विधा में परिवर्तन शुरू हुआ। 1975 ई. में यह परिवर्तन स्पष्टता से परिलक्षित होने लगा। आज कथावस्तु प्रयोगशील हो रही है। परंपरागत तत्वों से हटकर उपन्यासों की

रचनाएँ हो रही है। गिरिराज किशोर प्रयोगशील लेखक है। उन्होंने अनेक नए-नए विषयों को उपन्यासों के दवारा प्रस्तुत किया है। 'परिशिष्ट' में उन्होंने दलित जीवन, शिक्षा व्यवस्था तथा आरक्षण आदि को स्थान दिया है। 'परिशिष्ट' में कथा की अपेक्षा चरित्र को तथा चरित्र से अधिक परिवेश को महत्त्व दिया है।

गिरिराज किशोर ने 'परिशिष्ट' उपन्यास में दलित होने की भयावह मानसिकता को और आरक्षण के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला लेनेवाले छात्रों की त्रासदी को वाणी दी है। इसमें लेखक ने कुछ सवाल भी उठाएँ हैं - प्रकृति घृणामुक्त है मनुष्य मुक्त क्यों नहीं?

बावनराम का बेटा अनुकूल दलितों की बिरादारी में पहला दसवीं पास लड़का है। बावनराम आरक्षण का लाभ लेकर उसे इंजीनियर करना चाहते हैं। इसके लिए वे सांसद चौधरी साहब की सहायता लेते हैं। फिर भी अनुकूल को आई. आई. टी. तक पहुँचने के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यह देखकर दलितों के प्रति सरकारी नीति की वास्तविकता तथा सवर्णो की घृणित मानसिकता स्पष्ट होती है।

आई.आई.टी. में दलित छात्रों को 'घुसपैठिए' माना जाता है।उच्चवर्ग का छात्र खन्ना तथा उसके साथी दलित छात्रों पर अमानवीय अत्याचार करते हैं। संस्थान के अध्यापक तथा अधिकारी भी खन्ना और कंपनी का ही साथ देते हैं। इससे संस्थान में पढ़नेवाले किसी दलित छात्र की टाँग टूट जाती है, किसी को आत्महत्या करनी पड़ती है, कोई पागल हो जाता है तो कई दलित छात्र अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर घर चले जाते हैं लेकिन अनुकूल है कि अंत तक संघर्षशील रहता है। उसका मानना है कि घर जाकर हम अधिक अरक्षित हो जाएंगे, यह दूसरी तरह की आत्महत्या होगी। अत: अनुकूल का संघर्ष औरों के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है।

लेखक ने अंत में स्पष्ट किया है कि अनुसूचित कोई जाति नहीं मानसिकता होती है। अगर जातीयवाद की दिवार को तोड़ना है, भेदाभेद की नीति को

समाप्त करना है तो सवर्णों की मानसिकता में परिवर्तन लाना जरूरी है और यह जरूरी नहीं कि परिवर्तन सामूहिक हो अगर हर एक सवर्ण अपने-आप को परिवर्तित करने का निश्चय करें तो यकिनन घृणित मानसिकता बदलकर समाज एवं व्यक्तियों में स्वस्थ्य मानसिकता निर्माण होगी जो मानवता के पक्ष को उजागर करने में सक्षम साबित होगी।

'दलित' शब्द का अर्थ शब्दकोश तथा विद्वानों के अनुसार व्यापक और संकुचित दोन्हों रूप में स्पष्ट होता है। व्यापक अर्थ में वह दलित है जिसकी कोई जाति नहीं होती। जिसका दलन किया जाता है वह दलित है। संकुचित अर्थ में दलित याने वे लोग जो सदियों से अस्पृश्य या हरिजन के नाते अमानवीय अन्याय-अत्याचार सहते आये हैं।

भारतीय समाजव्यवस्था जातीयता पर आधारित है। दलित, समाज का एक अंग होते हुए भी सदियों से उपेक्षित रहा है। जातीयता के कारण दलितों को अन्याय-अत्याचार का सामना करना पड़ता है। जातिनिष्ठ समाज में दलितों को बार-बार अपमानित होना पड़ता है। दलितों के प्रति सवर्ण लोगों के मन में घृणा दिखाई देती है। दलित वर्ग के अंतर्गत भी भेदाभेद दृष्टिगोचर होता हैं। वे आपस में एक साथ भोजन तक करते नही है, न बेटी व्यवहार। बरसों से दलितों को दबाया गया है, सेवा के साधन के रूप में उनका इस्तेमाल किया गया है। अत: दलितों के मन में हीनता की भावना पैदा हो गई है। वे अपने को छोटी जाति का या हीन मानते आ रहे हैं। अज्ञान, अशिक्षा के कारण दलितों में व्यसनाधीनता, अंधविश्वास का प्रचलन है। इनके कारण उनका पारिवारिक जीवन भी प्रभावित हुआ है। शिक्षा के अभाव में दलित लोगों में परंपरागत मान्यताएँ प्रचलित है। आर्थिक अभाव के कारण दलित लोग पीड़ित दिखाई देते हैं। उनका जीवन निम्नस्तर का ही रहा है।

स्वातंत्र्यतापूर्व काल से लेकर आज तक दलितोद्धार का कार्य हुआ है। आजादी के बाद सवैधानिक व्यवस्था, शिक्षा, आरक्षण आदि से दलितों के जीवन में बदलाव आ रहा है। उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की तरफ ध्यान दिया जा रहा है।

आजादी के बाद धीरे- धीरे दलित जीवन में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है। आझादी के बाद की दलित पीढ़ी अनेक क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है, लेकिन कई शिक्षित दलित सामाजिक प्रतिष्ठा के दंभ में अपने ही लोगों से दूर जाकर सवर्ण मानसिकता का प्रमाण देते हैं। शहर तथा ग्रामीण क्षेत्र में जातीयता की भावना पूर्णत: नष्ट नहीं हुअी है। देश का उच्चस्तरीय शिक्षा संस्थान आई.आई.टी.भी इससे अलग नहीं है। वहाँ जाति के कारण दलित छात्रों को दुख, दर्द, यातनाएँ सहनी पड़ती है।

मानव जीवन में शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। भारत में शिक्षा की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है जो आज तक जारी है। वैदिक काल में 'गुरुकुल' में शिक्षा दी जाती थी। मध्यकाल में शिक्षा के केंद्र 'मक्ताब' तथा 'मदरसा' थे आधुनिक काल में विविध आयोग, कमेटियाँ आदि के निर्देश से शिक्षा के अनेक केंद्रो का विकास हुआ। उसमें से ही एक है - आई.आई.टी. - (भारतीय प्रौद्योगिकी शिक्षा संस्थान) यह एक स्वायत्त शिक्षा संस्थान है।

देश के प्रशासन या सरकार की तरफ से पिछड़े वर्ग, निम्न जातियाँ, दलित लोग आदि के हितों के लिए आरक्षण, स्कॉलरशीप जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय होते हैं। सच बात तो है कि जिसके हाथ योजनाओं की बागडौर है वे लोग ही भेदभावपूर्ण नीति अपनाते है। पारिणामत: दलित छात्रों को अनेक समस्याओं से संघर्ष करना पड़ता है।

आई.आई.टी. स्वायत्त शिक्षा संस्थान होने से अंतर्गत व्यवस्थापन से संबंधित निर्णय स्वतंत्रता से लिए जाते है। संस्थान से संबंधित पदाधिकारी, दलित तथा निम्न वर्ग के छात्रों का मनोबल तोड़ते हुए दिखाई देते हैं। ऐसा कर वे छात्रों में जातीयता के बल पर भेदभाव करते हैं। जो लोग निम्न वर्ग और दलित छात्रों का स्तर ऊँचा उठाने का प्रयास करते हैं, उनकी मद्द करते हैं उनपर व्यंग्य ही किया जाता है। अत: उच्च शिक्षा संस्थानों में होनेवाली ऐसी अनेक घटनाओं से जातीय द्वेष को बढ़ावा मिलता है।

आज आई.आई.टी जैसे अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वार्थी प्रवृत्ति, राजनीति, जातीय भेदाभेद अहं, आंतरिक खोखलापन, पाश्चात्यों का अंधानुकरन, उच्चवर्गीय मानसिकता, रैगिंग जैसी अनेक विकृतियों से ग्रस्त दिखाई देते हैं। यहाँ के नाममात्र अध्यापक तथा छात्रों में अच्छे मानवतावादी गुण दिखाई देते हैं।

अत: संबंधित लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है। इससे ही आई.आई.टी जैसी उच्च शिक्षा संस्थान की कमियाँ, दुरावस्था दूर हो सकेगी। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था के दवारा संघर्षरत छात्र जीवन का परिचय मिलता हैं। जहाँ खन्ना जैसे उच्च वर्ग के छात्र दलितों पर अन्याय कर उनकी शिक्षा व्यवस्था में रोडा डालते हैं वहाँ संस्थान के पदाधिकारी भी दलितों का पिछा नहीं छोडते। इतनी सारी भयावह व्यवस्था में दलित छात्र रामउजगार, अनुकूल संघर्ष करते दिखाई देते है। नीलम्मा, प्रो.मलकानी जैसे सवर्ण भी उनकी मदद करती हैं। इन पात्रो के दवारा यह स्पष्टता से परिलक्षित होता है कि गिरिराज किशोर उच्च आदर्श से भरे मानवतावाद के पक्षधर हैं।

गिरिराज किशोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उन्होंने 'परिशिष्ट' उपन्यास में दलित जीवन की समस्याएँ, आरक्षण, दलित छात्रों का शोषण, शिक्षा संस्थानों में फैली बुराईयाँ आादि का चित्रण किया हैं। किसी भी लेखक की नैतिक मान्यताएँ, दृष्टिकोण आदि समाज की मनोवृत्ति और विचारधाराओं से संपृक्त होती है। गिरिराज किशोर भी अपने युग की मनोवृत्ति और विचारधारा से अछूते नहीं रहे। आज साहित्य में नारी विमर्श और दलित चेतना चर्चित विषय हैं। प्रस्तुत उपन्यास में दलितों का वास्तविक जीवन उद्‌घाटित हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दलित लोगों से संबधित नारी शोषण, अंधविश्वास, व्यसनाधीनता, बालविवाह, छुआछूत, जातीयवाद, आर्थिक अभाव आदि समस्याएँ तो शिक्षा व्यवस्था से संबधित शिक्षा की समस्या, शिक्षा में राजनीति, शिक्षा क्षेत्र

में मूल्य विघटन तथा भ्रष्टाचार, शिक्षा क्षेत्र में राजनीति, रैगिंग, धन के लालच, आत्महत्या, आरक्षण आदि समस्याओं को रेखांकित किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से नारी पुरुषों के अत्याचार का शिकार हुई है। आधुनिक युग में भी इस स्थिति में कोई मूलभूत परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता है इसलिए समाज में नारी आज भी शोषित दिखाई देती है। इसका चित्रण विवेच्य उपन्यास में हुआ है। अंधविश्वास की समस्या परंपरा से चली आ रही है। भारतीय लोग चाहे अपने आप को कितने भी प्रगतिशील मानते हो लेकिन अंधविश्वास का प्रभाव वर्त मान जीवन पर दिखाई देता है। शिक्षा के प्रसार से इसकी तीव्रता थोडी कम हो रही है। आज समाज में व्यसनों का व्यापक प्रचार, फैशन, प्रतिष्ठा के तौर पर हो रहा है। व्यसनाधीनता के कारण आपसी संबंधों मे दरारें पैदा हो रही हैं। परिवारों का विघटन होता है। आज विवाह संस्था में भी अनेक बदलाव आ रहे हैं। फिर भी दलित समाज में बालविवाह होते हैं। इसके मूल कारण अज्ञान एवं अशिक्षा ही है।

प्राचीन काल से भारतीय समाज में जातिव्यवस्था का प्रचलन दिखाई देता है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में प्रतिबिंबित दलितों की ओर देखने की सवर्णों की घृणित मानसिकता हैं उसमें आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। सदियों से दलितों को अछूत माना गया है। सवर्ण दलितों का स्पर्श भी अपवित्र मानते हैं। जातीयवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण आपसी तनाव, शत्रुत्व, संघर्ष की स्थिति निर्माण होती है। आई.आई.टी. जैसी उच्च शिक्षा संस्थानों में भी जातीयवाद तथा भेदाभेद की भावना दिखाई देती है। अत: जातिभेद की भावना नई पीढ़ी में भी पनपती दिखाई दे रही है। जातिव्यवस्था एक मानवीय समस्या ही नहीं तो सामाजिक कलंक भी है।

दलित तथा निम्नवर्ग की स्थिति में शिक्षा के माध्यम से सुधार लाने के लिए आरक्षण की सुविधा दी गई। लेकिन इससे हजारों वर्षो से विशिष्टता और उत्कृष्टता का बोध पालनेवाले सवर्णों को मानसिक रूप में आहत किया है। दलितों के प्रति उनके मन में नए किस्म की घृणा और क्रोध की अभिव्यक्ति हुई।

आर्थिक अभाव के कारण दलित, निम्नवर्ग तथा गरीब लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा करने में असमर्थ है। इसी कारण कुछ छात्र अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ने के लिए विवश हैं। आधुनिक युग में शिक्षा दिन-ब-दिन महँगी होती जा रही है। आर्थिक अभाव के कारण दलित तथा निम्नवर्ग के लोग शिक्षा से वंचित रहते हैं। दलित शिक्षा से दूर रहें इसलिए सवर्णों द्वारा अनेक भ्रम फैलाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में अगर कोई दलित शिक्षा प्राप्त करता भी है तो उसे अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है। यह स्थिति विवेच्य उपन्यास में चित्रित आई.आई.टी. जैसी शिक्षा संस्था में दिखाई देती है। आजकाल के शिक्षा केंद्र तथा शिक्षक नैतिकता, पवित्रता से कोंसों दूर है। यह लोग पैसों के लिए विदेश जाने को प्राथमिकता देते हैं। शिक्षा केंद्रों में रैगिंग, सिगार, शराब का सेवन, कल्ब संस्कृति जैसी विकृतियाँ दिखाई देती हैं। आई. आई.टी. में दलित छात्रों पर अमानवीय अत्याचार होते हैं। उससे किसी की टाँग टूट जाती है, कोई पागल बन जाता है तो कोई आत्महत्या करता है। कई छात्र संस्थान छोड़कर चले जाते है। इससे बुद्धिजीवीयों द्वारा अपनायी जानेवाली राजनीति राजनीतिज्ञों से भी भयानक साबित होती है।

अत: स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सड़न पैदा हुई है और वह गंदगी से भरी हुई है। दलितों को भी उच्च शिक्षा का अधिकार मिला तो है लेकिन इस प्रकार की शिक्षा ही वे न ले ऐसी व्यवस्था भी कार्यरत है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में उक्त सभी समस्याएँ विशेष रूप से परिलक्षित होती हैं। लेखक ने उक्त समस्याओं का चित्रण सहज-सरलता से और प्रसंगानुरूप किया है। आज के समाज में दलितों के प्रति जो रवैया अपनाया जा रहा है उसे रू-ब-रू कराने में गिरिराज किशोर पूरी तरह से सफल हुए है।

मनुष्य भाषा के माध्यम से परस्पर विचार-विनिमय करता है। प्रत्येक रचनाकार भाषा के द्वारा ही अपनी साहित्य कृति को अभिव्यक्त करता है। गिरिराज

किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास की भाषा-शैली का मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य उजागर हुए हैं वे इस प्रकार है।-

गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास में संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग जगह-जगह मिलता है। घर के सामंती वातावरण के कारण विवेच्य उपन्यास में अरबी-फारसी के शब्दों की भरमार है। साथ ही तत्काल में अंग्रजों का संपर्क, आई. आई. टी. कानपुर में उच्च पद पर कार्यरत रहना तथा विदेशी यात्राओं के कारण अंग्रेजी शब्दों की अधिकता नजर आती है। भाषा के विविध प्रयोग विवेच्य उपन्यास में दृष्टिगोचर होते हैं। कहावते, मुहावरे, सूक्तियाँ, अपशब्द तथा गालियाँ आदि का भी प्रयोग पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल तथा यथार्थता से हुआ है।अत: प्रस्तुत उपन्यास में सहजता तथा स्वाभाविकता से भाषा-शैली का प्रयोग परिलक्षित होता हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की शैलियों में वैविध्य नजर आता है। विषय के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग परिलक्षित होता है। इसमें पत्रशैली, मनोविश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, स्वप्नशैली, आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, पूर्वदीप्ति, संवाद, टेलीफोन आदि शैलियों का प्रयोग स्पष्टता से परिलक्षित होता है। अत: 'परिशिष्ट' उपन्यास में भाषा-शैली का यथायोग्य प्रयोग दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में प्राप्त शैलियाँ पाठकों को संबंधित विषय पर सोचने के लिए बाध्य करती है।अत: स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'परिशिष्ट' उपन्यास भाषा-शैली की दृष्टि से सफल, श्रेष्ठ एवं सराहनीय बन पड़ा है।

❖ प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ :

1 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के माध्यम से लेखक का बहुमुखी व्यक्तित्व तथा कृतित्व आम आदमी को प्रेरित करने का कार्य करता है। विवेच्य विषय के अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

2 विवेच्य उपन्यास में दलितों के समग्र जीवन का अंकन किया है। इससे दलितों के वास्तविक एवं वर्तमान जीवन का पता चलता है।

3 विवेच्य उपन्यास में दलितों में प्राप्त परंपरागत मान्यताएँ, अज्ञान, हीनता की भावना, अंधविश्वास, व्यसनाधीनता, कुरीतियाँ आदि का पर्दाफाश करके समाज परिवर्तन का दृढतापूर्वक समर्थन किया है।

4 वर्तमान युग में भी दलितों के प्रति सवर्णों की मानसिकता में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।

5 विवेच्य उपन्यास में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उच्चस्तरीय शिक्षा संस्थानों में फैली बुराईयों के कारण विषाक्त हुई शिक्षा व्यवस्था के साथ शैक्षिक जगत के कटु सत्य को प्रस्तुत किया है।

6 विवेच्य उपन्यास में शिक्षा संस्थानों में आरक्षण के आधार पर दाखिला प्राप्त करनेवाले छात्रों की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है। ऐसी परिस्थिति में भी कुछ दलित छात्र बदलाव की उम्मीद न छोडकर संघर्ष करते हैं।

❖ अध्ययन की नई दिशाएँ

गिरिराज किशोर के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1 गिरिराज किशोर के उपन्यासों में चित्रित युगबोध।

2 गिरिराज किशोर के उपन्यासों में चित्रित समकालीन जीवन।

3 गिरिराज किशोर के उपन्यास : कथ्य एवं शिल्प।

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त शोध-विषय मेरे सामने उभरकर आए हैं। इन विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य हो सकता है। वस्तुत: हर विषय की अपनी सीमा होती है। यहाँ मेरे शोध-विषय की भी सीमा है। आशा है कल आनेवाले शोधकर्ता इन विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य संपन्न करेंगे।